9

कोविड–19 महामारी में पुस्तकालय की बदलती भूमिका

पूजा जैन*

विपरीत परिस्थितियाँ सदैव ही कुछ नवीन निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार करती हैं मानव के साहसों से संभावनाओं की तलाश सदा ही उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। प्रस्तुत लेख में कोविड–19 महामारी के समय पुस्तकालय के महत्व को बनाए रखने के लिए कुछ क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है। इन क्रियाकलापों से बच्चों की पढ़ने में रुचि बने रहने के साथ-साथ शब्दावली में कुछ नए शब्द भी जुड़ेंगे। वर्तमान की सम-विषम परिस्थिति के बारे में जागरूकता फैलेगी, कल्पना शक्ति बढ़ेगी, विचारात्मक क्षमता का विकास होगा और लेखन क्षमता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस लेख में ऑनलाइन शिक्षा एवं क्रियाकलापों के लिए उपयोगी सामग्री भी बताई गई है। इस लेख में उदाहरण सहित उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार से पुस्तकालय को आईसीटी (इनफ़ार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी) की मदद से इस कोरोना काल में भी सक्रिय कर रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है।

पढ़ने की ललक ही पुस्तकालय का सजीव बहुपयोगी, ज्ञानवर्धन का तिलस्मी बनकर उभरना पढ़ना, समझना और उसका समाहार करना है। इस सृष्टि का संबंध अनादि काल से किसी न किसी रूप में अधिगम से जुड़ा रहा है जैसे कि पत्थरों पर, पत्तों पर, धातुओं पर, कागज़ पर और अन्य तरीकों से प्राचीन समय में सूचना को संजोया जाता था। पुस्तकालय का कार्य आज भी वही है, पुस्तकों का चयन, खरीद व प्राप्त करना, सुव्यवस्थित करना, प्रसार करना और उद्देश्य भी अपने उपयोगकर्त्ताओं को सही समय पर सही सूचना देना ही है परंतु इन सभी प्रक्रियाओं का तरीका बदल गया है। जिस प्रकार से क्लासरूम टीचिंग को मज़बूत और रुचिकर बनाने के लिए ब्लैकबोर्ड से लेकर स्मार्टबोर्ड तक बदलती तकनीकी का उपयोग किया जा रहा है, उसी प्रकार से लाइब्रेरी का डिजिटल होना भी उसी प्रक्रिया का अहम हिस्सा है।

पुस्तकालय का महत्व एवं उपयोगिता

पुस्तकालय प्रत्येक देश की शिक्षा प्रणाली में अमूल्य भूमिका का निर्वाह करता है। शिक्षा प्रणाली में पुस्तकालयों का उद्देश्य सिर्फ़ नए विषयों के बारे में सूचना देना, पुस्तकों के द्वारा शंकाओं का समाधान एवं अज्ञानता को दूर करना, शिक्षित करना ही नहीं बल्कि उन सभी शक्तियों को उपयोगकर्ता तक पहुँचाना है जिससे वह व्यक्तिगत लाभ के साथ-साथ सामाजिक,

*सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110 016

© NCERT not to be republished

मानवीय और राष्ट्रीय स्तर पर लाभ के लिए उपयोग करने की क्षमता और प्रशिक्षण भी प्राप्त कर सके। जिस प्रकार से शिक्षा प्रगति और समृद्धि की ओर ले जाती है उसी तरह से पुस्तकालय औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चूँकि, औपचारिक शिक्षा, शिक्षण और शिक्षण पद्धति, शिक्षण सहायक सामग्री, पाठ्यक्रम, निर्देशों का माध्यम, पर्यावरण और संचार माध्यमों पर आधारित है। पुस्तकालय सीखने के आवरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और शिक्षा को नया रूप देने में मदद करते हैं। सभी प्रकार के अकादमिक पुस्तकालयों में मुख्य रूप से स्कूल पुस्तकालय शिक्षा प्रणाली के स्तंभ बनते हैं और वे विद्यार्थियों को अच्छे, सभ्य नागरिक बनाने के लिए तैयार करते हैं। यह भविष्य में उच्च शिक्षा और विशिष्ट शिक्षा के लिए पृष्ठभूमि है। पुस्तकालय स्कूल रूपी शरीर का हृदय है, जो जिज्ञासा जगाने, ज्ञानवर्धक और रचनात्मक जीवन के लिए नया ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम है।

कोविड–19

कोविड–19 से एक ऐसे शब्द की उत्पत्ति हुई है, जो वर्ष 2019 से पहले ना किसी ने सुना था ना पढ़ा था। कोविड–19 एक ऐसा अनभिज्ञ सच है जिसने एक ऐसे विश्व की रचना की है, जिसकी न तो किसी ने कल्पना की थी और न ही किसी ने कोई तैयारी। इसका प्रभाव सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक तथ्यों पर ही नहीं अपितु देश के संपूर्ण विकास पर पड़ रहा है। अन्य रूप में अगर इस महामारी का असर देखें तो मानसिक, धार्मिक, शारीरिक, व्यापारिक तथ्यों पर भी उल्लेखनीय है, परंतु बच्चों की शिक्षा एवं उनके परिपूर्ण विकास पर ऐसा पड़ा है जिसका प्रभाव अगले युग तक देखा जा सकेगा।

शिक्षा अपने मूल में समाजीकरण की एक प्रक्रिया है क्योंकि जब-जब समाज का स्वरूप बदला है, शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ है। कोरोना संकट के दौर में ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा विकल्प है जो कि शैक्षणिक संस्थानों के लिए इस चुनौतीपूर्ण समय में एक वरदान की तरह साबित हुआ है, जिसने ऐसे समय में विद्यार्थियों और शिक्षा के संबंध को जुड़ा रखने में एक अहम भूमिका अदा की है। लेकिन इस व्यवस्था को कक्षाओं में आमने-सामने दी जाने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकल्प बताना एवं उससे तुलना करना भारत के भविष्य के लिए अन्यायपूर्ण है।

भारत एक ऐसा देश है, जहाँ आज भी ऐसे पिछड़े हुए क्षेत्र (remote places) हैं, जहाँ अभी बिजली और सड़क भी नहीं पहुँचे। वहाँ 4जी नेटवर्क की तो कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसके अलावा जिन घरों के वातावरण में एकांत तो है ही नहीं और प्राथमिक ज़िम्मेदारी पढ़ाई भी नहीं है, उन घरों में घंटों ऑनलाइन मोबाइल के साथ अकेले बैठकर पढ़ने की स्थिति की कल्पना करना भी मुश्किल होगा। उसमें भी क्लासरूम की सामूहिकता और एकाग्रता का माहौल एक प्रश्न है और ऑनलाइन शिक्षा वर्तमान संकट की घड़ी में 'मज़बूरी में ज़रूरी' तो हो सकती है, पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विकल्प बिल्कुल भी नहीं हो सकती।

आज कोरोना संकट के दौर में ऑनलाइन शिक्षा के जरिए शिक्षा के स्वरूप में बदलाव का प्रस्ताव नीति निर्धारकों के द्वारा पुरज़ोर तरीके से सराहा जा

© NCERT not to be republished

रहा है। परंतु भारत जैसे विविधता भरे देश में कोई भी परिवर्तन लाना स्वयं में चुनौतीपूर्ण कार्य तो है ही, कभी-कभी जटिल कारणों की वजह से और भी मुश्किल हो जाता है। इन जटिल कारणों में सबसे महत्वपूर्ण है *डिजिटल डिवाइड* (digital divide) जिसका अर्थ है, इंटरनेट की सुविधाओं का फ़ायदा उठाने एवं न उठाने वालों के बीच का अंतराल। भारत में डिजिटल अंतराल बहुत ज़्यादा है, जिसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

- गैजेट की अनुपस्थिति
- इंटरनेट की अनुपस्थिति
- उपकरणों को प्रयोग करने की जानकारी न होना
- बदलाव में रुचि न होना
- उपरोक्त सभी के प्रति सकारात्मक सोच

ऑनलाइन शिक्षा एवं पुस्तकालय के क्रियाकलापों हेतु उपयोगी सामग्री

- इलेक्ट्रॉनिक गैजेट (कंप्यूटर, स्मार्टफ़ोन, लैपटॉप, टैब, स्मार्ट टी.वी. इत्यादि)
- इंटरनेट की सुविधा
- उपयोग करने का ज्ञान
- बिजली का होना

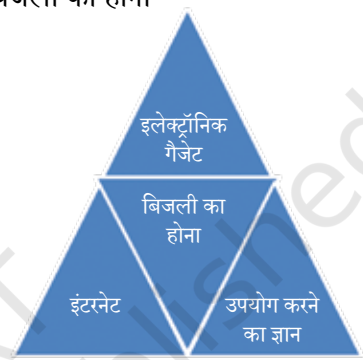

ऑनलाइन शिक्षा एवं क्रियाकलापों के लिए उपयोगी सामग्री

स्कूल पुस्तकालय कोविड–19 महामारी से पहले और बाद में

बिंदु	कोविड–19 महामारी से पहले स्कूल पुस्तकालय	कोविड–19 महामारी काल में स्कूल पुस्तकालय	कोविड–19 महामारी के बाद स्कूल पुस्तकालय
बच्चों के द्वारा पढ़ने (रीडिंग) में प्रयोग लाने वाले संसाधन	मुद्रित पुस्तकें (ज़्यादातर)	डिजिटल संसाधन एवं ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (वह सामग्री जो इंटरनेट पर बिना किसी रोक के अर्थात् फ्री में परंतु बिना किसी कमर्शियल उद्देश्य के, पढ़ने एवं डाउनलोड के लिए उपलब्ध हो)	दोनों तरीकों के संसाधन (प्रिंट + ई-रिसोर्सेज)
पुस्तकालय सेवाएँ	पुस्तकालय में जाकर	ऑनलाइन तरीकों से (बिना पुस्तकालय में जाए)	आईसीटी माध्यम द्वारा जैसे, कि—ई-मेल, यू-ट्यूब, गूगल मीट, व्हाट्सएप्प इत्यादि
पुस्तकालय में बच्चों की रुचि के कारण	विद्यालयी कार्य एवं क्रियाकलापों से संबंधित विषयों के लिए	लॉकडाउन में समय को पास करने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध	बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए (जैसे— एजुकेशन, इंटरटेनमेंट, इंटरनेट पर टीचर एवं अन्य लोगों से मीटिंग इत्यादि)

© NCERT not to be republished

पुस्तकालयों की विद्यालयों में बहुत ही अहम भूमिका है जैसा कि *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में भी कहा गया है कि सभी स्तरों पर पुस्तकालय एक आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तत्वों की तरह होना चाहिए। प्राथमिक स्तर में बच्चों को कुछ इस तरीके के क्रियाकलापों से पुस्तकों की तरफ लगाया जाए कि वह अपनी पूरी जिंदगी पढ़ने की आदत से जुड़े रहें। विद्यालयों के शुरुआती पाँच सालों में रीडिंग पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि यह समय बच्चों की नींव मज़बूत करने का होता है, जैसे कि— शारीरिक, मानसिक, भावुक, सामाजिक विकास एवं बच्चों का परिपूर्ण विकास का होता है।

कोविड–19 महामारी के समय में पुस्तकालयाध्यक्ष की ज़िम्मेदारियाँ

- महामारी के समय में बच्चों और पढ़ने के बीच के अंतराल को बढ़ने न देना।
- ऐसी गतिविधियों की योजना बनाना जिससे कि विद्यार्थियों की रुचि पढ़ने में बनने के साथ-साथ बढ़े और विशेष रूप से बच्चों की भागीदारी हो।
- नई शिक्षा तकनीकों को सीखना एवं बच्चों व शिक्षकों को भी प्रशिक्षण देना तथा पुस्तकालयों से संबंधित क्रियाकलापों में इस्तेमाल करना।
- शिक्षकों और बच्चों की शिक्षा के बीच का पुल बनना।

कोविड–19 महामारी के समय में पुस्तकालयाध्यक्ष के नए कार्य

- वर्तमान के इंटरनेट युग में असंख्यात, अव्यवस्थित सूचनाएँ उपलब्ध हैं, पुस्तकालयाध्यक्ष का कार्य है कि बच्चों की विभिन्न कक्षाओं के अनुसार सामग्री को स्कूल या लाइब्रेरी की वेबसाइट या व्हाट्सएप्प ग्रुप के माध्यम से शिक्षकों के साथ जुड़कर उपलब्ध करवाना।
- स्वयं को अद्यतन रखने हेतु व्यावसायिक संस्थानों अकादमिक संस्थानों एवं विभिन्न सोसाइटी द्वारा प्रबंधित वेबिनार एवं चर्चा को सुनना या शामिल होना व वर्तमान में आ रही कठिनाइयों का हल ढूँढ़ना।
- सूचना साक्षरता प्रोग्राम, जो कि पुस्तकों की व्यवस्था से संबंधित होता था, वह खोज तकनीक का प्रशिक्षण भी हो सकता है जो कि विद्यार्थियों को कॉलेज में भी एवं पूरी ज़िंदगी काम आएगा।
- शिक्षक की मदद से कक्षाकार्य, प्रोजेक्ट्स के लिए सामग्री ढूँढ कर बच्चों की मदद करना।
- आवश्यक वेबसाइट्स के लिंक्स की सूची तैयार करना एवं अपलोड करना।
- लाइब्रेरी के कालांश को नए क्रियाकलापों के साथ रुचिकर बनाना जिसमें वह शिक्षकों एवं अभिभावकों को सम्मिलित कर सकते हैं।

कोविड–19 महामारी में पुस्तकालय की महत्ता बनाए रखने हेतु आवश्यक उपाय

कोरोना काल में पुस्तकालय की महत्ता बनाए रखने के लिए निम्नलिखित आवश्यक परिस्थितियाँ हैं—

- पुस्तकालयाध्यक्ष का ऑनलाइन लाइब्रेरी कालांश लेने में रुचि होना।
- स्कूल के प्रिंसिपल को यह विश्वास दिलवाना की लाइब्रेरी कालांश भी और सभी विषयों के कालांश जितना महत्वपूर्ण है।
- पुस्तकालयाध्यक्ष को शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ समन्वय करना होगा ताकि क्रियाकलापों का उद्देश्य पूरा किया जा सके।
- बच्चों के लिए ऐसे क्रियाकलापों को तैयार करना, जो बच्चों द्वारा पसंद किए जाएँ और

© NCERT not to be republished

बच्चे अगली बार यह वाला कालांश कब होगा, उसका इंतज़ार करें।

कोविड–19 महामारी की अवधि ने सभी को नई तकनीकों को सीखने का अवसर या मज़बूरी दी है। सभी ने आवश्यकतानुसार एप्लिकेशंस को प्रयोग में लाना सीखा। इनमें गूगल क्लासरूम, गूगल वेबसाइट, गूगल फॉर्म्स इत्यादि शामिल हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा गूगल मीट, गूगल क्लासरूम जैसे एप्लिकेशंस के प्रशिक्षण दिए गए हैं जिन्हें यू-टयूब पर भी देखा जा सकता है। सीआईईटी जो कि रा.शै.अ.प्र.प. का ही भाग है, वह एजुकेशन टेक्नोलॉजी और आईसीटी का शिक्षा में उपयोग पर उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है। सभी वीडियो https://ciet.nic.in/pages.php?id=webinar लिंक पर उपलब्ध हैं। सभी कार्यक्रम निरंतर रूप से निम्नलिखित सभी टी.वी. चैनल पर भी दिखाए जाते हैं—

- स्वयं प्रभा डीटी टीवी किशोरमंच चैनल 31
- डीडी फ्रीडिश
- डिश टीवी
- टाटा स्काई
- एयर टेल
- वीडियोकॉन

इस कोविड–19 महामारी के समय पुस्तकालय के महत्व को बनाए रखने के लिए अग्रलिखित क्रियाकलापों का वर्णन किया गया है जो कि गूगल मीट, व्हाट्सएप्प और अन्य किसी तकनीक की मदद से करवाँए जा सकते हैं।

1. **ऑनलाइन बुक क्लब**— यह गतिविधि ऐच्छिक होनी चाहिए जिससे कि वे विद्यार्थी जिन्हें पढ़ने में रुचि है वे बढ़-चढ़ कर हिस्सा लें और अन्य मित्रों को भी उत्साहित करें। यह ऑनलाइन बुक क्लब सभी कक्षा का एक साथ बनाया जा सकता है, जिसे की गूगल मीट, व्हाट्सएप्प की मदद से बहुत अच्छे से व्यवस्थित किया जा सकता है। इस गतिविधि में पुस्तकों के शीर्षक को बताना, पुस्तकों के बारे में संक्षिप्त में चर्चा करना, पुस्तकों के पात्रों के बारे में बताना इत्यादि कार्यकलाप किए जा सकते हैं।
2. **कैटलॉग तैयार करना**— इस गतिविधि में बच्चों की मदद से एक पुस्तक सूची तैयार की जा सकती है जो कि अपने विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए ही नहीं अन्य विद्यार्थियों के साथ भी साझा (share) की जा सकती है। जो पुस्तकें पूर्णतः ऑनलाइन मुफ़्त उपलब्ध हैं, बच्चों से सिर्फ़ यह कहना है कि अपनी पसंद की एक पुस्तक का शीर्षक वेब-लिंक के साथ लाए और साझा करें। अगर एक कालांश में हर कक्षा के 10 बच्चों ने भी शीर्षक बताये, तो भी कम से कम 100 शीर्षक की सूची तैयार हो जाएगी जिसे आप व्हाट्सएप्प, लाइब्रेरी या स्कूल वेबसाइट पर भी लिंक्स के साथ सूची डाल सकते हैं। इस तरह की तैयार सूची हमेशा के लिए काम आ सकती है। इस सूची को तैयार करने के लिए बच्चों को एक फ़ॉर्मेट भी दिया जा सकता है, जो पृष्ठ 77 पर दिया गया है।

© NCERT not to be republished

क्रम संख्या	विषय	शीर्षक	प्रकाशक	वेब-लिंक

3. **बच्चों के द्वारा ऑनलाइन न्यूज़**— इस गतिविधि में बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार विषय दिया जाएगा जैसे कि कुछ बच्चों को खेल पसंद है, कुछ को राजनीति, कुछ को फ़िल्मी बातें, कुछ को आईसीटी की दुनिया, कोविड–19 से संबंधित ख़बरें। यह गतिविधि शिक्षकों के समन्वय से हर सुबह पहले से तैयार की जा सकती है जिसमें की हर बच्चा रोल नंबर से न्यूज़ बोलता जाएगा। इस गतिविधि से पढ़ना ही नहीं, वाचन-कौशल और आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और साथ में समकालीन खबरों के विषय में भी जानकारी मिलेगी जो कि आज के बच्चों के लिए अति-आवश्यक है, इससे विद्यार्थियों को अखबार की महत्ता का भी पता लगेगा।
4. **यदि आप पुस्तकालाक्ष्य हैं तो**— यह एक ऐसी गतिविधि है, जिसमें विद्यार्थियों को उनकी रचनात्मकता प्रदर्शित करने का ऐसा मौका मिलेगा। इसके अंतर्गत वह अपनी एवं अपने मित्रों के पसंद की गतिविधि की योजना बनाकर पूरी कक्षा को प्रभावित कर सकते हैं। इसमें वे नैतिक फ़िल्में दिखाना, किसी खेल के ज़रिये किसी रुचिकर विषय पर बातचीत, डम-शराड एवं किसी पुस्तक के पात्रों का अभिनय भी कर सकते हैं। इसमें बच्चों का मनोरंजन तो होगा ही साथ में कक्षा-प्रबंधन एवं गतिविधि के आयोजन में मदद भी मिलेगी। यह गतिविधि बच्चों में एक ऐसा विश्वास ला पाएगी जो की जीवनभर उनके काम आएगा।
5. **ऑन द स्पॉट वाचन कौशल**— जैसा कि बच्चों को गृहकार्य पसंद नहीं आता, यह गतिविधि सभी बच्चों की प्रतिभागिता करने में मदद करती है। इसमें बच्चे सबसे पहले अपनी पसंद के कोई भी चरित्र चाहे वह कोई नेता हो, अभिनेता हो, कार्टून चरित्र हो, लेखक हो या कोई परिवार का सदस्य हो, किसी भी विषय के बारे में 15 मिनट तक आनलाइन सर्च इंजन से पढ़कर या वीडियो देखकर ऑन द स्पॉट वीडियो बनाकर क्लास के ग्रुप पर अपलोड करनी हैं। यह गतिविधि बच्चों को बहुत ही पसंद आएगी।

उपरोक्त के अतिरिक्त पुस्तकालयाध्यक्ष ज़ोर से पढ़ना, कहानी सुनना व सुनाना आदि गतिविधि भी करवा सकते हैं।

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि इस कोरोना काल में पुस्तकालयाध्यक्ष को शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ सहभागी होकर सक्रिय योगदान देना है। योजना इस प्रकार से बनानी है कि घर से पढ़ने के अवसर को विशेष रूप से उपयोग कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित किया जा सके एवं जिससे कि विद्यार्थी पठन-पाठन कर स्वयं को, अपने परिवार को एवं देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करें। जिस प्रकार से विद्यालयों की नेटवर्किंग (नेटवर्क) का कार्य कई उद्देश्यों के साथ चल रहा है। समान रूप में स्कूली-पुस्तकालयों का नेटवर्क विकसित करने की आवश्यकता है। आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से कोविड–19 काल में भी पुस्तकालय एवं उससे

© NCERT not to be republished

संबंधित क्रियाकलापों को भी सक्रिय रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। कोविड–19 काल के इस समय को सकारात्मक रूप में लेकर सभी विद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों को मिलकर ऐसी योजना बनानी चाहिए जो कि भावी जीवन के लिए का एक नया रूप ले आए, जो कि राष्ट्रनिर्माण में अमूल्य योगदान होगा।

संदर्भ

कुंवर, राजीव कुमार. 2020. संकट की घड़ी में ऑनलाइन शिक्षा सही है, पर इसे कक्षाओं का विकल्प नहीं बनाया जा सकता. http://thewirehindi.com/122150/covid-19-lockdown-online-classes-higher-education/

जैन, प्रीति. 2017. प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकालय उपयोगिता तथा आधुनिक सूचना सेवाएँ. *रोल ऑफ़ स्कूल लाइब्रेरीज़ इन क्वालिटी एजुकेशन: अ सिलेक्टिंग रीडिंग (प्रथम संस्करण)*. रा.शै.अ.प्र.प. नयी दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नयी दिल्ली.

https://inbreakthrough.org/covid19-girls-education/

https://www.dhyeyaias.com/hindi/current-affairs/articles/digital-divide-in-india-a-comprehensive-overview

https://www.thehindubusinessline.com/opinion/how-to-bridge-the-digital-divide-in-education/article31868853.ece

https://www.indiatoday.in/education-today/featurephilia/story/global-ideas-that-can-reduce-digital-divide-in-india-amid-coronavirus-crisis-1688467-2020-06-13

© NCERT not to be republished